IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

मैथिली उपन्यासमे वर्णित जीवन–रीतिक सहयोगी रूपमे वर्णित वनस्पति

लक्ष्मी कुमार कर्ण

पूर्व शोध–प्रज्ञ (यू0जी0सी0)

विश्वविद्यालय स्नातकोत्तर मैथिली विभाग

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

बिहार भारत ।

मिथिला सदृश जलार्द्र क्षेत्रमे गाछ–वृक्ष–लता–पौध स्वाभाविक रूपमे अत्यधिक मात्रामे उत्पन्न रहैत आयल अछि । अत्यन्त प्राचीन कालमे ई एकटा आरण्यक प्रदेश छल । वर्तमानहु युगमे मनुष्यक जनसंख्यामे निरतंर वृद्धि होइत रहबाक कारणेँ वनस्पतिक संख्यामे यद्यपि बहुत ह्रास भए गेल अछि तथापि जतेक बेसी तरहक वनस्पति मिथिलामे भेटैछ से भारतवर्षक अन्यान्य क्षेत्रेमे नहि । वनस्पतिक आधिक्य रहबाक कारणेँ एहिठामक लोकक जीवन–रीति तथा मनोवृति सेहो ताहिसँ प्रभावित होइत रहल अछि तथा मैथिली साहित्यमे तकर प्रतिविम्बन भेटब स्वाभाविक थिक ।

वनस्पति सांस्कृतिक दृष्टिएँ मिथिलाक जीवनसँ कोना जुड़ल रहल अछि तथा एहिठामक जीवन–रीतिमे कोन–कोन रूपेँ आयल अछि ओकर चित्रण मैथिली उपन्यासमे सर्वत्र आयल अछि ।

एहिक्रममे सर्वप्रथम शैलेन्द्र मोहन झा कृत 'मधुश्रावणी'[1] कँ देखैत छी–

1. शांतिकुंजक निर्माणमे लता ओ वृक्ष–

   चारूकातसँ अपराजिताक लता, कात–कातमे आम कटहर, लताम, नीम ।

2. गौरी पूजाक लेल फूल–

   नव विवाहिता तरूनी लोकनि मधुश्रावणीमे गौरी–पूजाक निमित्त कनैलक टटका फूल तोड़ैत थिकीह ।

3. घर लग कलमबाग रहब ऐश्वर्यक प्रतीक–

   ठाकुर परिवारक घरसँ किछुए हटि'क कलमबाग छल ।

4. नायक–नायिकाक अभिसारमे सहायक–

   कमल नलिनीकँ जामुन खयबाक लेल चलय लेल कहैत छैक । जामुन खयबाक लेल जायब त' मात्र बहाना छैक । एहि बहाने दुनूक मिलन होइत छैक ।

5. मिथिलांचलक सामाजिक जीवनमे आमक गाछीक विशिष्ट स्थान–

   ''मिथिलामे आमक समयमे गाछीक शोभा अवर्णनीय रहैत अछि । दूर–दूर तक पसरल गाछी, बगवारक स्वर–संगीत, ओतुक्का चहल–पहल सभ अपूर्व रहैत अछि । आमक मासमे त' बुझू जे गामक सुषमा उपरि क' गाछिएमे चल अबैत अछि । मानवक सौन्दर्यक सृष्टि प्रकृतिक सौन्दर्य श्रीक सम्मुख नत भ' जाइत अछि ।[2]

भोरूकवा : श्री धीरेश्वर झा 'धीरेन्द्र'[3]

1. ममत्वभाव प्रदर्शनमे सहायक –

   सौंसे बस्तीकँ एक तरहेँ थेथरीपर ममता छलैक, किएक तँ ककरो गायकँ गायकँ पानि पियाक', कोनो बुढ़वा बाबाक चिलम भरि क' तँ ककरो बकरीकँ जिम्मक एक पाँज पात द'क' थेथरी ममताक जालकँ दूर धरि पसारि लेने छलि ।

2. गामक सभ्यता, आर्य जातिक पुरान परम्पराक वाहक, सम्मान प्रदर्शनक माध्यम–

   ठकवा दुरागमनक दिन मंजुरी करा कए घुरल तऽ रामानाथ मालिककँ ओहिठाँ सँ भेटल सुपारी खूटसँ खोललक आ अपन दुनू तरहत्थीक रिकबी बना मालिकक समक्ष फल रखलक ।

3. अरिपन तथा भित्तचित्रक रूपमे चित्रित, मिथिलाक शुभकार्यक प्रतीक, विस्तृत मैथिल संस्कृतिक अमर चेन्ह–

मुसहरबाक दुरागमनक अवसर पर ओकर माय घरक टाट सभपर मूसा फेटल माहिसँ उगा उगाकऽ किछु टंकुल –बंकुल आकृति सभ बनौने छलि आ देहरि लग गेरूसँ कमलक फूलक चित्र बनेने छलैक ।

दूध–फूल : रमानन्द रेणु [4]

1. दूबिक सब्जी गर्मीक मौसममे आरामदायक ओछओना–

   'आइ किछु औल बढ़ि गेल छलैक । तैं सँ अंगनइक बैसनाई बड़ रमनगर लगैत छलैक । कतेक ने लोकसभ ओहि सब्जी पर बैसल छलैक । सरना सेहो एकात मे ओंघराएल छल ।

2. मद्य उत्पादक –

   खजूरक गाछसँ ताड़ी उतारि सरना ओ रमदेवा मद्यपान करैत अछि ।

कन्यादान : प्रो0 हरिमोहन झ[5]

1. 'कन्यादान'क आधार पर ग्रामीण अंचलक विशे खाद्य–

   पटुआक झोर, मुनिगाक तरकारी, करमीक साग, तिलकोरक तरूआ, अमोट, आम–नेबो, धात्रीक आचार ।

2. साक्षी रूपमे–

   'कहल जाइछ जे सभागाछीमे जहन एक लाख ब्राह्मण पहुँचि जएताह तऽ पाकड़िक गाछ मौला जाएत ।

3. दातमनिक रूपमे–

   मिथिलावासी वनस्पतिक व्यवहार दातननिक रूपमे सेहो करैत छथि । बाँस, नीम, चिड़चिड़ी एवं भांइटिक दातमनि विशेष प्रचलित अछि ।[6]

पारो : वैद्यनाथ मिश्र' यात्री'[7]

1. वनस्पतिक उत्पादक माध्यमे प्रेम–व्यापारक द्विअर्थी सम्प्रेषण :–

   नायिका पारो जखन पाछूसँ आबि क' नायक बिरजूक आँखि मुनि दैत अछि त' बिरजू पारोक कोंचामे जे लडुब्बीक गोपी रहैत अछि ओकरा प्रत्यक्षतः लक्ष्य कए द्विअर्थी सम्बादमे अपन मनक उद्रेक कहैत अछि–

   ''के थिके' गए? पारो ? हट, छोड..... कने

   हमरो सूंघ' दे ने, नइ गए, हम ककरो नहि कहबै ।

   ला, कने देखियौ । रानी ने हमर .....।'[8]

राजा सलहेस : ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म'[9]

1. अन्तः संवेग निसपन्न स्थल –

'वटवृक्षक सुशीतल छाहरिमे नायिका कुसुमा अपन तीनू बहिनक संग विश्राम कएलीह । ओतहि बैसलि कुसमा राजा सलहेसक प्रति एकतरफा प्रेमकेँ ध्यान कऽ नोर बहबैत रहलीह ।[10]

2. सफल मनोरथक प्रतीक –

भगवतीक पूजाकाल राजमाता वनसप्तीक आँचरमे लालटेस ओड़हुलक एकटा पंचमुखी फूल खसल जकरा ओ सौभाग्यक प्रतीक मानलीह ।

3. औषधिक रूपमे –

अमृत–पत्र सर्प–विषक निवारण कएलक । धुर्जटी–लताकेँ पैरमे बान्हि लेलासँ साँप नहि कटैत अछि ।

नैका बनिजारा[11] –ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म' –

1. कामोद्दीपक –

चानन बिरिछकु झुटमुठक बीचमे कपड़घरमे बैसल नैका कोनो वनफूलक मातल सुगन्धिसँ अज्ञात मधुमय आकुलताक अनुभव कए कामुक कल्पनामे निमग्न होइत अछि ।[12]

2. गुप्त–मंत्रणा–स्थल –

चमैन रमकी आ डम्फा चण्डाल लताम, आम ओ केराक निकुंजमे बैसिकए नैकाक पुत्रकेँ बचएबाक हेतु गुप्त मंत्रणा कएलक ।

मरीचिका (भाग–1) – श्रीमती लिली रे[13]

1. फुलवाड़ी रास–रंगक स्थल :–

'जूही–चमेली' मे मुजरा होइत छल ।

2. पान प्रगाढ़ प्रेमक संवाहक :–

'छोटका ओझा जी जइबेर पनबट्टी खोलि पान खाथि, एकटा खिल्ली छोटकी दाइजीक मुहमे सेहो द' दैत रहथिन ।'

3. फूल प्रगाढ़ प्रेम, नवसंबंधक संवाहक–

''नवरानीक हाथमे दू टा गन्धराज इन्द्रकमलक फूल छलनि । एकटा फूल हीराक हाथमे दैत बजलीह– आइ सँ हम अहाँ सखी । एहि फूलसँ एखनहि लगा लिय 'सखी' ।''

मरीचिका (भाग–2) – श्रीमती लिली रे[14]

1. उद्विग्न मनक शांतिक हेतु वनस्पतिक साहचर्य :–

   'जाहि दिन समधिन साहेब रानी रत्नेश्वरी पर गोली नहि चलब' देलथिन, ताहि दिन विचित्र पराजयताक अनुभव भेल छलनि राजासरकारकेँ । बड़ी काल तक 'जूही–चमेली' मे बउआइत रहलाह ।'

2. वनस्पति जीवन रक्षक सदृश –

   ''मनेजर साहेब आमोद – उद्यानक फुलवाड़ी देखबैत कहलथिन – ''एही स्थल पर जड़ैया–विलोमक जड़ी लागल छल । तिब्बतकेर कोनो साधु राजासरकारकेँ द' गेलनि । जाहि समयमे औषध नहि भेटैत छल, लोकक बड़ उपकार भेलैक जड़ैया विलोमसँ ।''

3. वनस्पतिसँ अगाध सम्पत्तिक प्राप्ति :–

   राजा सरकार नेपालसँ एकटा औषधीय पौध (जड़ी) मँगवाकए ओकरा आमोद–उद्यानमे लगओलनि । ओही जड़ीसँ ओ जड़ैया–विलोम तैयार कए अकूत धनक प्राप्ति कएलनि ।

4. गाछक जाड़नि आजीविकाक साधन –

   'भरि दिन खासी छौड़ासब जारनि काटय ।

   म्नीबाबूक स्त्री अपनहि सबटा उठबाक' गोदाममे बन्द करथि । दोसर दिन ले कट'बला गाछ मे दाग लगा देथिन ।

5. फूल श्रृंगार प्रसाधनक रूपमे–

   :'बुड़ो गुरूसाँइक लालटेस फूल तोड़ि आनलनि । हीराक केशमे खोसि देलथिन । आनन्द तकर फोटो अपन कैमरामे झीकि लेलनि ।

6. गाछ विज्ञापन ठोकबाक स्थल –

   'बजारक रस्तामे सेहो कतेक ठाम गाछपर विज्ञापन ठोकल छलैक ।'

7. बगीचा : बच्चा सभक लेल कौतुहल ओ उल्लासक स्थल –

   'बुड़ो आ आनन्दक उत्साह कखनहुँ घटिते नहि छल । गाछ सबमे नब पात आयले छलैक । प्रत्येक गाछक एकटाक पात खोटि लेथि दुनू गोटे । कॉपीमे टाँकि, फलक नाम लिखि लेथि ।'

8. फूलक गुरूदस्ता प्रेम ओ सम्मानक प्रतीक–

   'खासी आया जूलीक माय हीराकेँ जंगली गुलाबक गुलदस्ताक उपहार देलक ।'

9. सहपाठिनीसँ सम्भाषण स्थल :–

   'कॉलेजक टिफिन टाइममे अनायासहि सुपारीक गाछ दिस आनन्दक पैर बढ़ि जानि । आनन्दिनी ओत्तहि बैसैत छलीह ।'

10. वनस्पति सम्पत्तिक रूपमे –

'धनेशजी लाठी ल'क' फानि बाजथि जे हुनकहि टा बल छनि ? हमरो लोकनि बलवान छी ।

''काटि ले फसिल, लूटि ले धान, जरा दे सिनेमा ।''

एहि तरहेँ उपर्युक्त निदर्शसँ स्पष्ट होइछ जे मैथिली उपन्यासमे ठाम–ठाम वनस्पति जीवन–रीतिक सहयोगी रूपमे वर्णित अछि । एहिसँ ई विचार पुष्ट होइछ जे मिथिलांचलक जनजीवनक वनस्पतिक अधिक निकट अछि जे एकर साहित्यमे सेहो परिलक्षित होइछ ।

संदर्भ :–

1. शैलेन्द्र मोहन झा, मधुश्रावणी (उपन्यास) ;1956
2. शैलेन्द्र मोहन झा, मधुश्रावणी (उपन्यास),1956 पृष्ठ –19
3. धीरेश्वर झा धीरेन्द्र, भोरूकवा (उपन्यास);1965
4. रमानन्द रेणु, दूधफूल (उपन्यास);1967
5. प्रो. हरिमोहन झा, कन्यादान (उपन्यास);1933
6. प्रो. हरिमोहन झा, कन्यादान (उपन्यास);1933 पृष्ठ–18
7. वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' पारो (उपन्यास);1956
8. वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' पारो (उपन्यास),;1956 पृष्ठ –2
9. ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म'; राजा सलहेस (उपन्यास);1972
10. ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म'; राजा सलहेस (उपन्यास);1972 पृष्ठ –4
11. ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म'; नैका बनिजारा (उपन्यास);1972
12. ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म'; राजा सलहेस (उपन्यास),;1972 पृष्ठ –45
13. लिली रे, मरीचिका (भाग–1) (उपन्यास);1981
14. लिली रे, मरीचिका (भाग–2) (उपन्यास);1982